Class 12 Subject: hindi(srajan) Topic -ch.5(bhusan)

प्रश्न/उत्तर करो।

प्रश्न 1.

भूषण के संकलित छंदों में कौन-सा रस और कौन-सा गुण है?

उत्तर:

भूषण के संकलित छंदों में वीर रस है तथा ओज गुण है।

प्रश्न 2.

कवि भूषण की दो रचनाओं के नाम बताइए।

उत्तर:

कवि भूषण की दो रचनाएँ-शिवराज भूषण' तथा 'छत्रसाल दशक' है।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 1.

भूषण ने अँधेरे पर किसका अधिकार बताया है?

उत्तर:

कवि भूषण ने अंधकार पर सूर्य के प्रकाश का अधिकार बताया है। चौथे छंद में कवि ने कहा है 'तेज तम अंस पर' तथा पाँचवे छंद में भी भूषण कहते हैं "भूषन अखंड नवखंड महिमंडल में, तम पर दावा रविकिरन समाज कौ।" सूर्य के उदय होते ही संपूर्ण पृथ्वी से अंधकार समाप्त हो जाता है।

प्रश्न 2.

सहस्रबाहु पर किसने विजय प्राप्त की थी?

उत्तर:

पुराणों में वर्णन आता है कि परशुराम के पिता महर्षि जमदग्नि, बड़े तपस्वी और अतिथियों के सम्मानकर्ता थे। एक बार प्रतापी राजा सहस्त्रबाहु उनके आश्रम पर आए। उनके साथ उनकी सेना भी थी। ऋषि जमदग्नि के पास एक दैवी गाय थी। उसके प्रभाव से ऋषि ने राजा का यथायोग्य

Scanned with CamScanner

आदर किया। राजा गाय के प्रभाव को देख ललचा गया उसने ऋषि से वह गाय माँगी। ऋषि के मना करने पर वह बलपूर्वक गाय को ले गया। इससे क्रोधित होकर परशुराम ने उसका युद्ध में संहार कर दिया।

प्रश्न 3.
वितुण्ड पर किसका अधिकार होता है?
उत्तर:
सिंह को मृगराज अर्थात् सारे पशुओं का राजा कहा जाता है। उसके पराक्रम के सामने किसी भी पशु का टिक पाना सम्भव नहीं होती। वितुण्डे (हाथी) लम्बी सँड वोला, विशालकाय और बलशाली पशु है परन्तु सिंह जब उस पर आक्रमण करता है तो वह भी उसका सामना नहीं कर पाती। इसलिए कवि भूषण ने उस पर सिंह का दावा बताया है।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 1.

पठित अंश के आधार पर सिद्ध कीजिए कि भूषण वीररस के कवि थे।

उत्तर:

यह सर्वविदित है कि रीतिकाल के श्रृंगारमेय वातावरण में कवि भूषण ने लीक से हट कर वीररस का शंखनाद किया था। उन्होंने महाराज शिवाजी और छत्रसाल को अपने काव्य का नायक बना कर उनकी वीरता, धाक और रणकौशल का वर्णन किया है।

महाराज शिवाजी अपनी चतुरंगिणी सेना सजाकर उत्साह में भरे शत्रुओं पर विजय पाने जा रहे हैं। स्पष्ट है कि उत्साह वीररस का स्थायीभाव है और शिवाजी उस समय वीररस में ओतप्रोत हैं। नगाड़ों की ध्वनि 'उद्दीपन' बनकर उनके उत्साह को बढ़ा रही है। छंद पाठकों के मन में भी वीररस का संचार कर रहा है।

Scanned with CamScanner

एक और दृश्य देखिए। वीर शिवा अहंकारी औरंगजेब के दरबार में उपस्थित है। शिवाजी को नीचा दिखाने के लिए उन्हें छह हमारी मनसबदारों जैसे छोटे पद वालों के साथ स्थान दिया गया है। कवि यहाँ पर भी शिवाजी के वीर स्वभाव का परिचय कराता है। क्रोध रौद्र रस का स्थायीभाव है। और वीर को अनुचित और स्वाभिमान पर आघात करने वाले आचरण पर क्रोध आना स्वाभाविक है। निर्भीक, स्वाभिमानी और वीरपुरुष भरे दरबार में औरंगजेब को चुनौती देते हैं।

इसी प्रकार अन्य संभावित छंदों में भी हम महाराज शिवाजी की वीरता और शत्रुओं पर उनकी धाक का प्रमाण देखते हैं। 'तेरी करबाल धरै म्लेच्छन को काल', म्लेच्छवंस पर सेर शिवराज है" तथा जहाँ पातसाही वहाँ दावा सिवराज कौ" जैसे कथन शिवाजी महाराज वीरता का प्रमाण दे रहे हैं।

अत: संकलित छंदों से स्वत: सिद्ध हो रहा है कि भूषण वीर रस के कवि थे।

Scanned with CamScanner